1 जनवरी 2022 ■ ₹15

फार्म एन फूड

जमीन में यकीन, यकीन में धन

पोटैटो डिगर से आलू की खुदाई

प्याज व लहसुन में पौध संरक्षण

पशुओं में थनैला रोग और उस की रोकथाम

DELHI PRESS
राज्य स्तरीय
फार्म एन फूड
अवार्ड-2021

पौधशाला में एकीकृत जीवनाशी प्रबंधन

फार्म एन फूड अवार्ड ने किसानों का बढ़ाया हौसला

www.sarita.in/farm-n-food

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

कठिन समस्याएं अब न होंगी

पूर्ण स्वदेशी, पूर्ण आयुर्वेदिक

सच्ची सहेली है
बेहतर स्वास्थ्य के
लिए सबसे भरोसेमंद
औषधि एवं टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

टॉनिक के साथ पाएं
20 टेबलेट्स *Free*

67 दुर्लभ जड़ी-बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक निम्न समस्याओं में विशेष सहायक है।

New
सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
INDIA'S MOST TRUSTED BRAND
67 जड़ी-बूटियों से बना,
महिलाओं के लिए भरोसेमंद आयुर्वेदिक टॉनिक

Helps in:

- कठिन दर्द
- थकान
- कमर कटना
- चिड़चिड़ापन
- कमजोरी
- इम्यूनिटी

सच्ची सहेली®

24x7 Helpline : 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli | Available at all medical & general stores

संपादकीय

आप के लिए

केंद्र सरकार के 3 कृषि कानूनों के खिलाफ किए गए ऐतिहासिक आंदोलन में जीत हासिल करने वाले किसान समाज की मुश्किलें अभी खत्म नहीं हुई हैं. अकेले महाराष्ट्र राज्य की बात करें, तो पिछले 5 महीनों में खुदकुशी करने से कुल 1,076 किसानों की मौत हुई है.

यह कोरी सुनीसुनाई बात नहीं है, बल्कि इस की जानकारी राज्य आपदा प्रबंधन और पुनर्वास मंत्री विजय वडेट्टीवार ने एक लिखित उत्तर में महाराष्ट्र विधानसभा को दी है.

किसानों की खुदकुशी का यह भयावह आंकड़ा इसी साल जून से अक्तूबर महीने का है. सरकार ने यह भी बताया कि खुदकुशी करने वाले 482 किसानों के परिवारों को सरकार की ओर से आर्थिक मदद दी गई है.

आर्थिक मदद का यह लौलीपौप न जाने कब से गरीब किसान परिवारों को थमाया जा रहा है, जबकि हकीकत में कौन यह जा कर देखता है कि उक्त परिवार को मदद मिल भी गई है या नहीं?

वैसे भी किसी की अनचाही मौत के बदले कुछ रकम थमाना समस्या का समाधान नहीं है. कोई किसान नहीं मरना चाहता है, बल्कि वह तो यह उम्मीद करता है कि खेत में ही खप कर अपना परिवार पाल सके, पर उसे ऐसा करने की भी सहूलियत नहीं मिलती है.

कुदरत की मार, सरकारी भ्रष्टाचार और महंगी होती खेतीकिसानी एक गरीब खेतिहर की कमर तोड़ देती है. जो सरकार उसे सहूलियत नहीं दे पाती है, वह उस की मौत के बाद चंद रुपए बतौर मुआवजा दे कर इस बात की वाहवाही लूटने की कोशिश करती है कि देखो हम किसानों के कितने बड़े हमदर्द हैं.

सरकार की इसी अनदेखी और रूखेपन का नतीजा यह होता है कि किसान खेत से सड़क पर आंदोलन करने आ जाता है, अपना हक मांगने के लिए, पर वहां भी उस की लड़ाई आसान नहीं होती है. सरकार को उन पहलुओं पर गौर करना चाहिए कि कोई इनसान क्यों जीने से बेहतर मरना आसान समझता है. किसान इस देश की जीवनरेखा हैं. उन की अनदेखी देश की अनदेखी है, जो हमें आगे बढ़ने में रुकावट पैदा करती है.

इस में जो...

फार्म फूड 1 जनवरी 2022

4

पोटैटो डिगर से आलू की खुदाई

आलू की खपत दुनियाभर में बहुत ज्यादा है. यह एक नकदी फसल है और इस में आधुनिक यंत्रों के इस्तेमाल से मुनाफा बढ़ाया जा सकता है. पोटैटो डिगर एक ऐसा ही यंत्र है, जो आलू की खुदाई को आसान बनाता है और समय की बचत भी कराता है. यह यंत्र बाजार में आसानी से उपलब्ध है, जिसे किसान खरीद कर इस्तेमाल कर सकते हैं.

6 मिट्टीपानी की जांच कराएं कम लागत में अधिक मुनाफा पाएं
8 फार्म एन फूड अवार्ड ने किसानों का बढ़ाया हौसला
10 पशुओं में थनैला रोग और उस की रोकथाम
11 खबरें खेतखलिहानों की
16 प्याज व लहसुन में पौध संरक्षण
18 हरित क्रांति (श्वेत क्रांति) बनाम गुलाबी क्रांति
21 जनवरी माह के खास काम

पौधशाला में एकीकृत जीवनाशी प्रबंधन

22

पौधशाला में पौधे लगाने और उन का सही रखरखाव करने से उन्हें सेहतमंद बनाया जा सकता है. इस के लिए उन्नत बीज, बढ़िया खाद और अच्छी दवाओं का इस्तेमाल ध्यान में रखना चाहिए.

फार्म फूड
जमीन में रहकर, जमीन में धन
1 जनवरी 2022, अंक: 357
संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

दिल्ली प्रैस
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **अन्य कार्यालय:** 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009**. जी-3, एच्वीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052**. ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय)**. बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय)**. 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026**. 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008**. 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003**. फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001**. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011**. 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001**. गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006**. जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031**.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.
लेखकों से : छपने के लिए भेजे जाने वाले लेख वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी रचनाएं ज्यादा पसंद की जाएंगी.

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Pte. Ltd., New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल:
article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ई मेल:
invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल:
editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल:
subscription@delhipress.in

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

फार्म एन फूड पत्रिका की एक प्रति की कीमत 15 रु.
1 साल के लिए 589 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)
2 साल के लिए 1139 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि. ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055

पोटैटो डिगर से आलू की खुदाई

✻ भानु प्रकाश राणा

हमारे देश के कई हिस्सों में आलू की खुदाई शुरू हो चुकी है. लेकिन इस बार भी आलू की बंपर पैदावार के चलते किसानों को आलू की सही कीमत नहीं मिल पा रही है. यही वजह है कि कुछ किसानों ने तो कुछ दिनों के लिए अपने खेत से आलू की खुदाई रोक दी है. उन्हें इंतजार है कि आलू का बाजार भाव कुछ ठीक हो तो खुदाई करें.

हालांकि आलू की अगेती खेती लेने वाले किसान अपने खेत में आलू की फसल लेने के तुरंत बाद गेहूं की बोआई कर देते हैं. अभी जो बाजार में आलू आ रहा है, वह कच्चा होता है. उस का छिलका भी हलका रहता है, इसलिए इस में टिकाऊपन नहीं होता. इसे स्टोर कर के नहीं रखा जाता.

फरवरी महीने तक आलू पूरी तरह से तैयार होता है. इसे किसान बीज के लिए व आगे बेचने के लिए भी कोल्ड स्टोरेज में रखते हैं. इस के लिए किसान आलू की अलगअलग साइजों में छंटाई कर ग्रेडिंग कर के रखें, तो अच्छे दाम भी मिलते हैं और आगे के लिए स्टोर करने के लिए सुविधा रहती है.

आलू की फसल आने के बाद उस के रखरखाव की भी खासा जरूरत होती है, क्योंकि आलू को खुला रखने पर उस में हरापन आ जाता है.

आलू की फसल तैयार होने के बाद आलू की खुदाई मजदूरों द्वारा और आलू खुदाई यंत्र (पोटैटो डिगर) से की जाती है. हाथ से खुदाई करने पर काफी आलू कट जाते हैं और मंडी में आलू की सही कीमत नहीं मिलती है.

इसी काम को अगर आलू खोदने वाली मशीन से किया जाए, तो कम समय में आलू की खुदाई कर सकते हैं. मशीन के द्वारा आलू खुदाई करने पर आलू साफसुथरा भी निकलता है. उस के बाद आने वाली फसल की बोआई भी समय पर कर सकते हैं.

आलू की फसल खुदाई करने लायक होने पर आलू के पौधों को ऊपर से काट दें या उस पर खरपतवारनाशी दवा का छिड़काव कर दें, ताकि पौधों के पत्ते सूख जाएं और फसल की खुदाई ठीक से हो सके.

आलू खुदाई यंत्र

केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल द्वारा तैयार आलू खुदाई यंत्र एकसाथ 2 लाइनों की खुदाई करता है. इस यंत्र में 2 तवेदार फाल लगे होते हैं, जो मिट्टी को काटते हैं. इस में नीचे एक जालीदार यंत्र भी

लगा होता है, जो मिट्टी में घुस कर आलू को मिट्टी के अंदर से निकाल कर बाहर करता है. साथ ही, इस यंत्र पर एक बैड लगा होता है, जिस पर जाल के घेरे से आलू निकल कर गिरते हैं. यह बैड लगातार हिलता रहता है. इस बैड के हिलने से मिट्टी के ढेले टूट कर गिरते रहते हैं और साफ आलू खेत में मिट्टी की सतह पर गिरते हुए निकलते हैं. इस के बाद मजदूरों की सहायता से आलुओं को बीन कर खेत में जगहजगह इकट्ठा कर लिया जाता है.

संस्थान द्वारा निर्मित पोटैटो डिगर को 35 हौर्सपावर के ट्रैक्टर के साथ जोड़ कर चलाया जाता है. एक हेक्टेयर जमीन की आलू खुदाई में 3 घंटे का समय लगता है और 12 लिटर डीजल की खपत होती है.

इस यंत्र की अधिक जानकारी के लिए आप केंद्रीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, नवी बाग, भोपाल से संपर्क कर सकते हैं या आप अपने नजदीकी कृषि विभाग से भी आलू खुदाई यंत्र के बारे में जानकारी ले सकते हैं.

महेश एग्रो का पोटैटो डिगर

महेश एग्रो वर्क्स के पोटैटो डिगर में 56 इंच और 42 इंच के बैड लगे होते हैं. 2 लाइनों में आलुओं की खुदाई होती है. 45 हौर्सपावर के ट्रैक्टर में आलू खुदाई यंत्र को जोड़ कर चलाया जा सकता है.

प्रकाश पोटैटो डिगर

यह मशीन भी सभी प्रकार के आलू खुदाई के लिए उत्तम है. 35 हौर्सपावर या उस से अधिक क्षमता वाले ट्रैक्टर के साथ इसे चलाया जाता है. मशीन में डबल जाल लगा होने के कारण आलू भी साफसुथरा निकलता है.

नवभारत इंडस्ट्रीज के प्रकाश ब्रांड के कृषि यंत्र आज भी खेती के क्षेत्र में अच्छी पकड़ बना रहे हैं.

आप भी अगर इन के यंत्र खरीदना चाहते हैं, तो मोबाइल फोन नंबर 09897591803 पर बात कर सकते हैं.

इस के अलावा अनेक पोटैटो डिगर बाजार में मौजूद हैं. इस के लिए आप कृषि विभाग या अपने नजदीकी कृषि यंत्र निर्माता से पता कर सकते हैं. ■

मिट्टीपानी की जांच कराएं

कम लागत में अधिक मुनाफा पाएं

✻ भानु प्रकाश राणा

समयसमय पर किसानों को अपने खेत की मिट्टी की जांच जरूर करानी चाहिए, ताकि मिट्टी जांच से मिलने वाले नमूने के आधार पर अपनी खेती में जरूरी खाद, उर्वरक, बीज आदि की मात्रा तय कर सकें. ऐसा करने से किसानों को अपने खेत में अंधाधुंध खाद, उर्वरक देने से नजात तो मिलेगी ही, बल्कि खेत की मिट्टी को सही पोषक तत्त्व सही मात्रा में मिल सकेंगे.

मिट्टी का नमूना लेने की विधि

☛ सब से पहले अपने खेत को उर्वराशक्ति के अनुसार 2 या 2 से ज्यादा भागों में बांट कर रैंडम आधार पर 8-10 स्थानों से मिट्टी का एकएक नमूना लें.

☛ मिट्टी का नमूना लेने से पहले ऊपर की सतह से घासफूस साफ कर लें और एक लंबी खुरपी से 'V' आकार का गड्ढा खोदने के बाद उस के एक तरफ से एक इंच मोटी मिट्टी की परत निकाल कर किसी बरतन में डालें.

☛ इस तरह से पूरे खेत के 8-10 स्थानों से मिट्टी ले कर अच्छी तरह से मिला कर उस का एक ढेर बनाएं और उस ढेर पर + का निशान बनाएं.

☛ अब इस के आमनेसामने के 2 भागों की मिट्टी को हटा दें और बची हुई मिट्टी को दोबारा इकट्ठा कर लें. यह प्रक्रिया तब तक करें, जब तक कि मिट्टी तकरीबन 500 ग्राम न रह जाए.

☛ इस 500 ग्राम मिट्टी को एक साफ कपड़े की थैली में भरें व कागज पर अपना नाम सहित पूरा पता, विगत में ली गई और भविष्य में ली जाने वाली फसलों के नाम अंकित कर के उस थैली में डाल दें. इसी प्रकार की एक परची थैली के ऊपर बांध कर मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला में जांच के लिए भेजें.

सिंचाईपानी का नमूना लेने की विधि

किसान सिंचाई के लिए अपने खेत में जिस पानी का उपयोग करते हैं, उस पानी का नमूना लेने के लिए यदि नलकूप है, तो पंप को 8-10 मिनट चलाने के बाद व यदि खुला कुआं है, तो बालटी से पानी निकालते समय उसे 8-10 बार डुबो लें और पानी के नमूने को एक साफ बोतल में नलकूप या कुएं के पानी से अच्छी तरह धो कर पूरा भर लें और बोतल के ऊपर किसान अपना पूरा नाम व पता लिख कर प्रयोगशाला को जांच के लिए भिजवाएं.

अधिक जानकारी हासिल करने के लिए अपने निकटतम कृषि कार्यालय में संपर्क करें या फिर किसान काल सैंटर के नि:शुल्क दूरभाष नंबर 18001801551 पर बात कर के अपनी समस्या का समाधान करें. ■

स्वस्थ एवं उज्ज्वल
त्वचा के लिए
New
Dr. Juneja's
रूप मंत्रा
®
Ayurvedic Face Cream & Face Washes
✓ Paraben Free
✓ Alcohol Free
✓ Steroids Free
✓ Silicon Free
✓ Mineral Oil Free
Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
NEEM
MIX FRUIT
ALOEVERA
LIME & MINT
No.1 BRAND
INDIA'S MOST TRUSTED BRAND
Most Trusted Brand of Asia 2016

24x7 Helpline No.: 87259 66666 | Website: www.roopmantra.com | Available at all medical & general stores

राज्य स्तरीय

* बृहस्पति कुमार पांडेय

फार्म एन फूड अवार्ड ने

फार्म एन फूड पत्रिका देश के किसानों को न केवल खेतीकिसानी से जुड़ी जानकारी मुहैया कराती है, बल्कि आम बोलचाल की भाषा में यह पत्रिका खेतीबारी की नई तकनीकी, बागबानी, पशुपालन, कुक्कुटपालन, मत्स्यपालन, डेरी व डेरी उत्पाद, फूड प्रोसैसिंग, खेती वगैरह से जुड़ी मशीनों सहित खेत से बाजार सहित ग्रामीण विकास और किसानों की सफलता की कहानियों और अनुभवों को अन्नदाता किसानों तक अपने लेखों और समाचारों के जरीए पहुंचाने का काम करती रही है. यही वजह है कि इस पत्रिका का प्रसार देश में तेजी से बढ़ रहा है और खेती में रुचि रखने वाले पाठकों की तादाद में भी तेजी से इजाफा हो रहा है.

पिछले 2 सालों से जब देश और दुनिया कोरोना के कहर से जूझ रही थी, उस दशा में भी 'फार्म एन फूड' ने किसानों का साथ नहीं छोड़ा है, क्योंकि यह पत्रिका किसानों को प्रिंट और डिजिटल दोनों ही में खेतीबारी से जुड़ी तकनीकी जानकारियां देने का काम कर रही है.

इतना ही नहीं, यह पत्रिका न केवल लेखों के जरीए किसानों की मददगार बनी हुई है, बल्कि समयसमय पर उन का सम्मान कर के किसानों के प्रयासों और अनुभवों को लोगों की नजर में लाने का काम करती रही है.

इसी क्रम में किसानों के सम्मान के लिए पिछले कई सालों से फार्म एन फूड अवार्ड का आयोजन उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में किया जाता रहा है. इस बार यह आयोजन मध्य प्रदेश के सतना जिले के चित्रकूट में राज्य स्तरीय फार्म एन फूड एग्री अवार्ड के नाम से किया गया, जिस के आयोजन में जल योद्धा के नाम से मशहूर उमाशंकर पांडेय ने मुख्य सहयोगी की भूमिका निभाई.

किसान बने कार्यक्रम का अहम हिस्सा

15 दिसंबर, 2021 को मध्य प्रदेश के सतना जिले में स्थित चित्रकूट के कामदगिरी मुख्य द्वार स्थित सभागार में उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश से आए तकरीबन 100 किसानों का जमावड़ा गवाह बना और खेती में नवाचार और तकनीकी के जरीए बदलाव लाने वाले किसानों को सम्मानित किया गया.

इस मौके पर मुख्य अतिथि मदन दास ने कहा कि पानी और शुद्ध पर्यावरण जीवन की मूलभूत आवश्यकता है. अधिकांश पानी प्रदूषित हो गया है. पर्यावरण अशुद्ध हो गया है.

उन्होंने यह भी कहा कि किसान अन्नदाता है, स्वराज्य का मुखिया है. हमें किसानों के लिए, उन की आवश्यकताओं के लिए तैयार रहना चाहिए. हमारा देश ऋषि और कृषि प्रधान देश है. मैं दिल्ली प्रैस को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने चित्रकूट में राज्य स्तरीय पुरस्कार दे कर किसानों को सम्मानित किया है. किसानों का सम्मान करना गौरव की बात है.

महोबा नगरपालिका के चेयरमैन, प्रतिनिधि सौरभ तिवारी ने कहा कि किसान राजाओं का राजा है. जय जवान जय किसान ही असली भारत है. वहीं युवा किसान नेता गणेश विश्व ने कहा कि भारत की खुशहाली का रास्ता खेत और खलिहान से हो कर गुजरता है.

जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार के जल योद्धा सम्मान से सम्मानित किसान पैरोकार उमाशंकर पांडेय ने कहा कि धरती पर हर किसी को सीना तान कर चलने का अधिकार है. वह किसान है. धरती से धनधान्य पैदा करने वाले किसान को ही धरतीपुत्र कहा गया है. किसानों को हीनभावना त्याग कर अपने पूर्वजों की भांति राष्ट्र और समाज के लिए सदैव नवाचार करते रहना चाहिए.

किसान अरविंद ने कहा कि किसान पलायन को रोकना होगा. वहीं किसान कल्लू यादव ने कहा कि सरकार और समाज को किसानों के साथ खड़ा होना चाहिए, ताकि अच्छे बीज मिलें, समय पर पानी मिले और बाजार का सही भाव मिले.

खेतीबारी और जड़ीबूटी के जानकार ओपी मिश्र ने कहा कि आज जब किसानों के लिए खेतीबारी से जुड़े साहित्य का अभाव हो गया है, ऐसे में फार्म एन फूड पत्रिका द्वारा आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर किसानों के लिए लेखों के जरीए जानकारियों का खजाना खोल दिया है.

उन्होंने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि फार्म एन फूड अवार्ड पा कर यह पता चला कि अगर किसान उन्नत तकनीकी का उपयोग करे तो वह कभी भी घाटे में नहीं रहेगा.

उन्होंने इस तरह के आयोजन को बेहद सराहनीय कदम बताते हुए कहा कि इस तरह के आयोजन से किसानों का मनोबल बढ़ता है.

बस्ती जिले से आए प्रगतिशील किसान राममूर्ति मिश्र ने कहा कि वे पिछले 30 वर्षों से भी अधिक समय से दिल्ली प्रैस की पत्रिकाओं के नियमित पाठक रहे हैं. दिल्ली प्रैस ने देश के हर तबके को ध्यान में रख कर पत्रिकाएं निकाली हैं. उस ने समाज को एक नई दिशा देने का काम किया है.

उन्होंने कहा कि वे साल 2009 से फार्म एन फूड पत्रिका के नियमित पाठक हैं. इस पत्रिका में जितने सारगर्भित ढंग से किसानों के लिए जानकारियां दी जाती हैं, वह खेतीबारी से जुड़ी किसी अन्य पत्रिका में आज तक पढ़ने को नहीं मिलीं.

किसान विजेंद्र बहादुर पाल ने कहा कि किसान तभी प्रगति कर सकता है, जब वह

किसानों का बढ़ाया हौसला

आधुनिक तकनीक और उन्नत कृषि प्रणाली का उपयोग करे. इस के लिए सरकार भी तमाम योजनाएं संचालित कर रही है. किसान इन योजनाओं का लाभ ले कर घाटे की खेती से उबर सकते हैं.

सेना के रिटायर्ड व प्रगतिशील किसान अमित विक्रम त्रिपाठी ने दिल्ली प्रैस की पत्रिका फार्म एन फूड के प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि मीडिया द्वारा किसानों के लिए इतने बड़े स्तर पर आयोजन फार्म एन फूड के किसानों के विकास के समर्पण की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है.

सम्मानित हुए कृषि वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद्र, थरियांव, फतेहपुर के वैज्ञानिक डा. जितेंद्र सिंह एवं डा. साधना वैश को कृषि क्षेत्र में किए गए उपलब्धिपूर्ण कामों के लिए राज्य स्तरीय फार्म एन फूड एग्री अवार्ड से सम्मानित किया गया. फतेहपुर के किसानों के प्रोत्साहन के लिए प्रदान किया गया.

वैज्ञानिक डा. जितेंद्र सिंह को उत्तर प्रदेश के कई जनपदों में किसानों के बीच उपलब्धिपूर्ण कामों के साथ पहचान बनाने और बुंदेलखंड में कृषि विकास के स्थायीकरण की मुहिम पर साल 2005 से 2012 तक लगातार किसानों के साथ काम करने व 8 तकनीकी मौडल, जो किसानों को आत्मनिर्भर व स्वावलंबी बनाने का मौडल है, को गांव व किसानों के बीच स्थापित करने के लिए यह अवार्ड दिया गया.

इस मौके पर उन्होंने कहा कि उन के मौडल गांव पाराबन्नोबेगम, बबेरु बांदा की उपलब्धि को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर के कुलपति, निदेशक व फैकल्टी ने स्वयं देखा है.

उन्होंने बताया कि मौडल गांव की सफलता की कहानी को आईसीएआर की वैबसाइट पर भी देखा जा सकता है.

उन्होंने यह भी बताया कि इस अवार्ड से पूर्व भी खेतीबारी के लिए किए जा रहे कामों के लिए उन्हें बुंदेलखंड गौरव अवार्ड 2018 व आयुक्त चित्रकूट धाम मंडल, बांदा द्वारा प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जा चुका है.

उन्होंने कहा कि जल योद्धा उमाशंकर पांडेय व प्रगतिशील किसान, जिन्होंने गांव और खेत में लाभकारी खेती के मौडल स्थापित किए हैं, उन के कामों के चलते यह अवार्ड मिला.

गृह विज्ञान की वैज्ञानिक डा. साधना वैश को महिला सशक्तीकरण, पोषण सुरक्षा और मूल्य संवर्धन के क्षेत्र में किए जा रहे कामों के लिए फार्म एन फूड एग्री अवार्ड दे कर सम्मानित किया गया.

इस मौके पर उन्होंने सभी किसानों के साथ ही फार्म एन फूड और दिल्ली प्रैस समूह का आभार व्यक्त किया.

किसानों की सफलता व अनुभवों का आदानप्रदान

आकर्षण का केंद्र रहे फार्म एन फूड अवार्ड में प्रगतिशील किसानों द्वारा अपने कृषि उत्पाद और नवाचारों के बारे में जानकारी दी गई.

कार्यक्रम में आए किसानों को किसान राम मूर्ति मिश्र ने जैविक खेती की जानकारी दी और बताया कि किसान जैविक विधि से खेती कर के न केवल लागत में कमी ला सकते हैं, बल्कि डेढ़ से दोगुना आमदनी भी ले सकते हैं.

चित्रकूट के किसानों ने औषधीय खेती से आमदनी बढ़ाने के टिप्स दिए और बताया कि उन्होंने किस तरह से चित्रकूट में औषधीय खेती करने वाले किसानों को बिचौलियों के चंगुल से नजात दिला कर उन की आमदनी को दोगुना किया है.

किसान बने फार्म एन फूड के वार्षिक ग्राहक

फार्म एन फूड द्वारा किसानों के लिए आयोजित किए गए कार्यक्रम में आए तकरीबन 100 किसानों को दिल्ली प्रैस की तरफ से इस पत्रिका की सैंपल कौपी मुफ्त उपलब्ध कराई गई. पत्रिका में छपे ज्ञानवर्धक लेखों को पढ़ कर कई किसान पत्रिका की विशेष स्कीम के तहत वार्षिक ग्राहक भी बने.

इस मौके पर किसानों का कहना था कि खेतीबारी से जुड़ी इतनी अच्छी पत्रिका के ग्राहक बन उन्हें देशभर के किसानों और कृषि विशेषज्ञों के अनुभवों और सुझावों के बारे में घर बैठे जानकारी मिलेगी.

इतना ही नहीं, कई किसानों का कहना था कि पत्रिका के रजिस्टर्ड डाक से मिलने के कारण उन्हें शहर तक पत्रिका के लिए भागदौड़ से भी छुटकारा मिल जाएगा. ■

पुरस्कार पा कर खिले चेहरे

डा. जितेंद्र सिंह, कृषि वैज्ञानिक, डा. साधना वैश, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान), उमाशंकर पांडेय, जलग्राम जखनी, बांदा, गणेश प्रसाद मिश्र, ओम प्रकाश मिश्र (हर्बल मैडिसनल प्लांट ऐक्सपर्ट), डा. शिव प्रेम याज्ञिक (क्षेत्रीय इतिहासकार, बुंदेलखंड क्षेत्र, कर्वी), विजेंद्र बहादुर पाल, बस्ती, अमित विक्रम त्रिपाठी, बस्ती, राहुल अवस्थी (जैविक किसान, कृषि सलाहकार) बांदा, अखिलेश्वर सिंह (फूलों की खेती) बांदा, सीए अंकित अग्रवाल, अरविंद चतुर्वेदी, गंगा प्रसाद पांडेय, रामकुमार शुक्ल, सुरेखा (कृषि व समाज कार्य), अरविंद छिरौलिया, अंबिका प्रसाद यादव (गनीवा फार्म कुरिया), रामकेश यादव, श्रवण कुमार पांडेय, संजय कुमार यादव, रामबाबू मिश्रा, देवनाथ अवस्थी, गणेश प्रसाद मिश्र, शिवसागर सिंह राजपूत, महेश कुमार मिश्र, सौरभ तिवारी, ललित कुमार पांडेय, संतोष त्रिपाठी, महानंद सिंह पटेल, अमरनाथ सिंह पटेल, चंदन सिंह पटेल, रामराज सिंह, सचिन तुलसा त्रिपाठी (कृषि पत्रकार) को पुरस्कार मिले.

पशुओं में थनैला रोग और उस की रोकथाम

* **डा. नगेंद्र कुमार त्रिपाठी,** वैज्ञानिक, पशुपालन, कृषि विज्ञान केंद्र, जमुनाबाद, लखीमपुर-खीरी

दुधारू पशुओं में अकसर थनैला रोग हो जाता है. इस वजह से किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ता है. समय पर उचित उपाय अपना कर इस रोग से छुटकारा पाया जा सकता है. पशु डाक्टर की देखरेख में ही उपचार करेंगे, तो आप का पशु भी सेहतमंद रहेगा.

वैसे, थनैला रोग का मतलब दूध देने वाले पशु के अयन यानी थन की सूजन और दूध की मात्रा के रासायनिक संघटन में अंतर आना होता है. अयन में सूजन, अयन का गरम होना और अयन का रंग हलका लाल होना इस रोग की खास पहचान है.

थनैला रोग विश्व के सभी भागों में पाया जाता है. इस से दुग्ध उत्पादन कम होता है और दुग्ध उद्योग को भारी माली नुकसान उठना पड़ता है. थनैला रोग जीवाणुओं, विषाणुओं और प्रोटोजोआ आदि के संक्रमण से होता है. संक्रमण के दौरान कई कारक खुद ही दूध में आ जाते हैं.

अगर इस का दूध इनसान इस्तेमाल करे, तो उसे भी कई रोग हो सकते हैं. इस वजह से यह रोग और भी खतरनाक हो जाता है. बीमार पशु के दूध को अगर उस का बच्चा सेवन करता है, तो वह भी बीमार हो सकता है.

आमतौर पर यह रोग छुआछूत और दूसरी कई वजहों से होता है, पर कई जीवाणुओं व विषाणुओं से होने पर दूसरे पशुओं में भी फैल सकता है. कई बार थन पर छाले पड़ जाते हैं, उस समय दूध निकालने पर थन पर घाव हो जाता है और हालत ज्यादा बिगड़ जाती है.

उपचार व रोकथाम

☛ बीमार पशु के अयन और थन की सफाई रखनी चाहिए.

☛ बीमारी की जांच शुरुआती समय में ही करवा लेनी चाहिए.

☛ थन या अयन के ऊपर किसी भी तरह के गरम तेल, घी या पानी की मालिश नहीं करनी चाहिए.

☛ दूध निकालने से पहले और बाद में किसी एंटीसैप्टिक लोशन से थन व अयन की धुलाई करनी चाहिए.

☛ डेरी में यदि ज्यादा पशु हैं, तो समयसमय पर थनैला रोग के परीक्षण का काम स्थानीय पशु डाक्टर की सलाह से जरूर करें.

☛ ज्यादा दूध देने वाले पशुओं को थनैला रोग का टीका भी लगवाना चाहिए.

☛ दूध निकालते समय थन पर दूध की मालिश नहीं करनी चाहिए. उस की जगह घी या तेल वगैरह का इस्तेमाल करना चाहिए.

☛ पशु में रोग होने पर तत्काल निकट के पशु डाक्टर से संपर्क कर उचित सलाह व दवा लें.

दूध देने वाले पशु से संबंधित सावधानियां

☛ दूध देने वाला पशु पूरी तरह से सेहतमंद होना चाहिए. टीबी, थनैला वगैरह रोग नहीं होने चाहिए. पशु की जांच समयसमय पर पशु डाक्टर से कराते रहना चाहिए.

☛ दूध दुहने से पहले पशु के शरीर की अच्छी तरह सफाई कर देनी चाहिए. दुहाई से पहले पशु के शरीर पर चिपका गोबर, धूल, कीचड़, घास आदि साफ कर लेनी चाहिए, खासतौर से पशु के शरीर के पिछले हिस्से, पेट, अयन, पूंछ व पेट के निचले हिस्से की खासतौर पर सफाई करनी चाहिए.

☛ दूध दुहने से पहले अयन की सफाई पर खास ध्यान देना चाहिए. अयन व थनों को किसी जीवाणुनाशक घोल से धोया जाए और घोल के भीगे हुए कपड़े से पोंछ लिया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा.

☛ अगर किसी थन में कोई रोग हो, तो दूध निकाल कर फेंक देना चाहिए.

☛ दूध दुहने से पहले हर थन की 2-4 दूध की धार जमीन पर गिरा देनी चाहिए या अलग बरतन में निकाल लेना चाहिए.

दूध देने वाले पशु के बंधने की जगह से संबंधित सावधानियां

☛ पशु बांधने व खड़े होने की जगह खुली होनी चाहिए.

☛ फर्श अगर मुमकिन हो तो पक्का होना चाहिए. अगर नहीं है, तो कच्चा फर्श भी समतल होना चाहिए. फर्श में गड्ढे वगैरह न हों. मूत्र व पानी निकालने का उचित इंतजाम होना चाहिए.

☛ दूध दुहने से पहले पशु के चारों ओर सफाई कर देनी चाहिए. अगर बिछावन है, तो दुहाई से पहले उसे हटा देना चाहिए.

☛ दूध निकालने वाली जगह की दीवारें, छत आदि साफ होनी चाहिए. उन की चूने की पुताई करवा लेनी चाहिए और फर्श की फिनाइल से धुलाई 2 घंटे पहले कर लेनी चाहिए.

दूध के बरतन से संबंधित सावधानियां

☛ दूध दुहने का बरतन साफ होना चाहिए. उस की सफाई पर खास ध्यान दिया जाना चाहिए. दूध के बरतन को पहले ठंडे पानी से, फिर सोडा या अन्य जीवाणुनाशक रसायन से मिले गरम पानी से, फिर सादा खौलते हुए पानी से धो कर धूप में या चूल्हे के ऊपर उलटा रख कर सुखा लेना चाहिए.

☛ साफ किए हुए बरतन पर मच्छरमक्खियों को नहीं बैठने देना चाहिए. यह भी ध्यान रहे कि बरतन को कुत्ता, बिल्ली वगैरह चाट न सकें.

☛ दूध दुहने वाले बरतन का मुंह चौड़ा व सीधा आसमान में खुलने वाला नहीं होना चाहिए, क्योंकि इस से मिट्टी, धूल, गोबर आदि के कण व घासफूस के तिनके, बाल आदि सीधे दुहाई के समय बरतन में गिर जाएंगे. इसलिए बरतन संकरे मुंह वाला हो और टेढ़ा होना चाहिए.

☛ बरतन पर जोड़ व कोने कम होने चाहिए.

अगर आप लोग इन बातों का ध्यान रखेंगे, तो यकीनन ही आप के पशु को थनैला रोग नहीं होगा. ज्यादा जानकारी के लिए कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष से संपर्क करें. ■

‘सब्जी अनुसंधान एवं नवाचार’ पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
भारत सरकार
AGRICULTURE & FARMERS WELFARE MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

वाराणसी : केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने भाकृअनुप-भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान, वाराणसी, उत्तर प्रदेश द्वारा ‘पोषण, उद्यमिता एवं पर्यावरण के लिए सब्जी अनुसंधान एवं नवाचार’ पर आयोजित तीनदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का पिछले दिनों आयोजन किया.

इस अवसर पर नरेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार किसानों को खुशहाल बनाने के लिए प्रयासरत है. उन्होंने यह भी कहा कि सरकार एक लाख करोड़ रुपए के एग्री इंफ्रा फंड के साथसाथ 10,000 नए कृषक उत्पादक संगठन बनाने के लिए तत्पर है. उन्होंने बताया कि इस वर्ष बागबानी फसलों का 331 मिलियन टन के बंपर उत्पादन का लक्ष्य हासिल किया है.

पोषण का आधार होने के साथसाथ किसानों की आय एवं कृषि विविधीकरण का मुख्य स्तंभ होने के कारण सब्जियों के अधिकाधिक उत्पादन व उपयोग पर केंद्रीय मंत्री ने बल दिया.

नरेंद्र सिंह तोमर ने भाकृअनुप-भासअनुसं, वाराणसी द्वारा निर्मित ‘सब्जी एप’ पर रोशनी डालते हुए बताया कि यह उन्नत वैज्ञानिक तकनीक की जानकारी देती है. उन्होंने कृषि में आर्टिफिशयल इंटैलीजैंस जैसे ड्रोन, रोबोट, सैंसर आदि के साथसाथ जैविक खेती को बढ़ावा देने पर भी जोर दिया.

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री कैलाश चौधरी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई.

डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव (डेयर) एवं महानिदेशक, भाकृअनुप, नई दिल्ली ने कहा कि यह सम्मेलन सब्जी संबंधित उन्नत तकनीकियों के प्रयोग को बढ़ावा देगा, जिस से सुरक्षित एवं पोषणीय सब्जी उत्पादन सुनिश्चित होगा.

महानिदेशक ने यह भी कहा कि यह सम्मेलन फल एवं सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के लिए सब्जी शोध, प्रसार एवं शिक्षा की प्रभावी नीतियों को बनाने की दिशा में एक सार्थक प्रयास है. उन्होंने कृषि एवं बागबानी क्षेत्रों में निजी सहभागिता बढ़ाने की जरूरत पर भी जोर दिया.

डा. आनंद कुमार सिंह, उपमहानिदेशक, बागबानी विज्ञान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने सब्जी अनुसंधान की प्राथमिकताओं एवं संस्थान द्वारा विकसित सब्जी फसलों की किस्मों के साथसाथ लोबिया (काशी निधि), भिंडी (काशी लालिमा), बैंगन एवं टमाटर की ग्राफ्टेड तकनीक से विकसित पौधों के द्वारा किसानों को प्राप्त होने वाले लाभों के बारे में बताया.

डा. कीर्ति सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल ने कहा कि यह संस्थान विश्व में सब्जियों की सर्वश्रेष्ठ संस्था है, जो देश की पोषण सुरक्षा एवं किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में कार्यरत है.

डा. पंजाब सिंह, कुलाधिपति, रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश ने कहा कि इस सम्मेलन में किसान केंद्रित तकनीकियों पर ध्यानाकर्षण किया जाएगा, जिस से पोषण सुरक्षा एवं कृषि विविधीकरण द्वारा किसानों की आमदनी एवं उत्पादन बढ़ाने में आसानी होगी.

संस्थान के निदेशक डा. टीके बेहेरा ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों एवं औनलाइन सब्जी बीज पोर्टल के माध्यम से देशभर के किसानों के लिए सब्जी के बीजों की उपलब्धता पर प्रकाश डाला.

डा. टीके बेहेरा ने कहा कि इस सम्मेलन में देशविदेश के विभिन्न संस्थानों द्वारा सब्जी शोध, शिक्षा एवं प्रसार के क्षेत्र में उन की उपलब्धियों पर चिंतन एवं भविष्य की दिशा तय की जाएगी. ■

ड्रोन के इस्तेमाल से छोटे किसानों के जीवन में आएगा बदलाव

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कृषि क्षेत्र में ड्रोन के इस्तेमाल के लिए मानक परिचालन प्रक्रिया (एसओपी) जारी कर दी. इस के तहत ड्रोन से कीटनाशकों और जमीन व फसल से जुड़ी अन्य पोषक दवाओं का छिड़काव किया जा सकेगा.

केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने एक आधिकारिक बयान में कहा कि कृषि क्षेत्र में ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल समय की जरूरत है और इस से किसानों को फायदा होगा. एसओपी जारी करते हुए उन्होंने कहा कि साल 2014 से ही सरकार की नीतियां 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने पर केंद्रित हैं.

उन्होंने आगे कहा कि किसान उत्पादक संगठन और कृषि अवसंरचना फंड से छोटे किसानों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव आएंगे. देश में पहली बार टिड्डी दल के हमलों से बचाने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया जाएगा. सरकार कृषि क्षेत्र में लगातार नई तकनीक लाने का प्रयास कर रही है, ताकि इस क्षेत्र की उत्पादकता और दक्षता दोनों बढ़ सके.

वजन का वर्गीकरण, उड़ान की अनुमति, दूरी से जुड़े प्रतिबंध का जिक्र : कीटनाशक छिड़काव के लिए ड्रोन के एसओपी में जरूरी कानूनी उपाय, उड़ान की अनुमति, दूरी से जुड़े प्रतिबंध, वजन का वर्गीकरण, ज्यादा आबादी वाले क्षेत्र में प्रतिबंध, ड्रोन का रजिस्ट्रेशन, सुरक्षा बीमा, पायलट का प्रमाणपत्र, परिचालन योजना, उड़ान क्षेत्र, मौसम की स्थिति और परिचालन से पहले, मध्य और बाद की स्थिति के लिए एसओपी जैसी महत्त्वपूर्ण चीजों को जोड़ा गया है. ■

प्रगति

पशुपालन में देश अव्वल

कानपुर : पशुपालन के नए शोधों और विकास से संबंधित दोदिवसीय कार्यशाला चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, सीएसए कानपुर में शुरू हुई. प्रसार निदेशालय, पशु स्वास्थ्य एवं विकास पर आयोजित वैज्ञानिक कार्य क्षमता विकास प्रशिक्षण में 25 केंद्रों से शीर्ष वैज्ञानिकों ने भाग लिया.

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डा. अरविंद कुमार सिंह ने वैज्ञानिकों स कहा कि देश को कृषि के क्षेत्र में अभी बहुत आधुनिक होना बाकी है. वैज्ञानिकों द्वारा की गई कृषि शोधों को आम किसान तक पहुंचाना बड़ी चुनौती बना हुआ है.

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में पशुपालन का महत्त्वपूर्ण स्थान है. विश्व की कुल गायों की संख्या के स्तर से देखा जाए, तो हमारा देश इन की संख्या के मामले में प्रथम स्थान रखता है, जबकि बकरियों व भैंसों के मामले में द्वितीय और तृतीय स्थान पर है. अंडा उत्पादन के मामले में तृतीय स्थान पर है, वही देश की अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान 18 फीसदी है. उस में पशुपालन का योगदान एकतिहाई से भी अधिक है.

पशुपालन विभाग के डाक्टर योगेंद्र गुप्ता ने पशुओं में होने वाले रोग के बारे में बताया.

विश्वविद्यालय के पशुपालन विभाग के विभागाध्यक्ष डा. पीके उपाध्याय ने गायभैंसों में नस्ल सुधार विषय पर विस्तार से बताया.

प्रोफैसर डा. वेदप्रकाश ने पशुओं में होने वाली बीमारियों के बारे में बताया. वहीं प्रोफैसर डा. एमपीएस यादव ने दुग्ध विपणन एवं प्रसंस्करण विषय पर प्रतिभागियों को बताया.

प्रशिक्षण समन्वयक डा. एसबी पाल ने प्रशिक्षण की रूपरेखा प्रस्तुत की. इस अवसर पर डा. धनंजय सिंह, डा. सोहनलाल वर्मा, डा. अनिल कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारी एवं 25 से अधिक विभिन्न कृषि विज्ञान केंद्र से आए कृषि वैज्ञानिक मौजूद रहे. ■

स्प्रिंकलर विधि से सिंचाई करने पर 80 से 90 फीसदी की छूट

साल 2015 में सिंचाई योजना शुरू की गई थी, जिसे अब 2 साल के लिए बढ़ा दिया गया है. आप को बता दें कि खेती करते वक्त किसानों को पानी की कमी न हो, इसीलिए प्रधानमंत्री सिंचाई योजना को शुरू किया गया था. केंद्रीय सरकार ने इस योजना के लिए 50 हजार करोड़ रुपए आवंटित किए हैं.

स्प्रिंकलर विधि से सिंचाई करने पर सरकार द्वारा लागत का 80 से 90 फीसदी की छूट दी जाती है. इस विधि से खेत को बिना समतल किए ही सिंचाई की जा सकती है. ढलानों या कम ऊंचाई पर ये विधि बहुत प्रभावी हो रही है.

इस योजना का उद्देश्य देश में सिंचाई प्रणाली में निवेश को आकर्षित करना, खेती योग्य भूमि का विस्तार करना, पानी की बरबादी रोकने के लिए खेत में पानी का उपयोग बढ़ाना, पानी की बचत करने वाली तकनीकों, सटीक सिंचाई को लागू कर के प्रति बूंद फसल में वृद्धि करना है.

इस योजना का लाभ उठाने के लिए किसानों के पास कृषि योग्य भूमि होनी चाहिए. इस योजना के पात्र लाभार्थी देश के सभी वर्ग के किसान होंगे.

पीएम कृषि सिंचाई योजना के तहत सैल्फ हैल्प ग्रुप्स, ट्रस्ट सहकारी समिति, इंकार्पोरेटेड कंपनियां, उत्पादक कृषकों के समूहों के सदस्यों और अन्य पात्रता प्राप्त संस्थानों के सदस्यों को भी लाभ प्रदान किया जाएगा.

पीएम कृषि सिंचाई स्कीम 2021 का लाभ उन संस्थानों और लाभार्थियों को मिलेगा, जो न्यूनतम 7 वर्षों से लीज एग्रीमेंट के तहत उस भूमि पर खेती करते हों. कौंट्रैक्ट फार्मिंग से भी यह पात्रता प्राप्त की जा सकती है.

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के लिए किसानों को आधारकार्ड, पहचानपत्र, किसानों की जमीन के कागजात, जमीन की जमाबंदी (खेत की नकल), बैंक अकाउंट पासबुक, पासपोर्ट साइज फोटो, मोबाइल नंबर की जरूरत होती है. ■

धूमधाम से मनाया गया मशरूम दिवस

उदयपुर : पिछले दिनों 22 दिसंबर, 2021 को राजस्थान कृषि महाविद्यालय में मशरूम दिवस बड़े ही धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफैसर नरेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि मशरूम दिवस को मनाना आज बहुत ही प्रासंगिक है. उन्होंने कहा कि मशरूम खाने से हमारी प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है. साथ ही, इस से कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं.

उन्होंने कहा कि मशरूम में सौ प्रकार के एंटीऑक्सीडेंट और फाइबर पाए जाते हैं. आजकल सभी तबकों में मशरूम का भोजन व औषधि के रूप में प्रचलन बढ़ा है.

मशरूम परियोजना के समन्वयक डा. श्याम सुंदर शर्मा ने बताया कि राजस्थान कृषि महाविद्यालय के सभागार में 22 दिसंबर, 2021 को मशरूम दिवस मनाया गया.

इस अवसर पर मशरूम फौर कंप्लीट एग्रो वेस्ट मैनेजमैंट विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिस में विशिष्ट अतिथि राजस्थान कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. दिलीप सिंह, अनुसंधान निदेशक डा. शांति कुमार शर्मा एवं क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डा. रेखा व्यास ने भी अपने विचार व्यक्त किए.

उन्होंने कहा कि महाविद्यालय की मशरूम इकाई में अनेक प्रजातियों के मशरूम उगाए जा रहे हैं और विद्यार्थियों व युवा वर्ग के लिए मशरूम उत्पादन पर नियमित प्रशिक्षण भी आयोजित किए जाते हैं.

डा. श्याम सुंदर शर्मा ने बताया कि मशरूम दिवस पर आयोजित इस कार्यशाला में 500 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया. इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक आर्य कौशिक, डाक्टर जेपी शर्मा, डाक्टर सुसंग वैल्यू, डा. सुधीर उपरेती भी उपस्थित थे. अतिथियों ने इस अवसर पर मशरूम उत्पादन की उन्नत विधियां एवं अनुभव आत्मक प्रशिक्षण इकाई हेतु एक प्रायोगिक मैनुअल का विमोचन भी किया.

कार्यशाला के दौरान मशरूम की विभिन्न भोज्य सामग्री बनाई गई, जिन में मशरूम का सूप, मशरूम के पकोड़े एवं मशरूम की चाय प्रमुख थे. ■

जानकारी

आलू की फसल में झुलसा रोग से रहें सावधान

ऐसे करें प्रबंधन

–प्रो. रवि प्रकाश मौर्य

तापमान गिरने और लगातार मौसम में बदलाव होने से इस समय आलू की फसल में कई तरह के रोग लगने की संभावना बनी रहती है. अगर समय रहते इन का प्रबंधन न किया गया, तो आलू की खेती करने वाले किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ सकता है.

इस बारे में आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या के सेवानिवृत्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष प्रो. रवि प्रकाश मौर्य ने बताया कि मौसम की अनुकूलता और बदली होने पर आलू की फसल में फंफूद का संक्रमण होने की संभावना बढ़ जाती है, जो झुलसा रोग की प्रमुख वजह बनती है.

झुलसा रोग 2 प्रकार के होते हैं, अगेती झुलसा और पछेती झुलसा.

अगेती झुलसा दिसंबर महीने की शुरुआत में लगता है. इस रोग में पत्तियों की सतह पर छोटेछोटे भूरे रंग के धब्बे बनते हैं. सब से पहले नीचे की पत्तियों पर संक्रमण होता है, जहां से रोग ऊपर की ओर बढ़ता है, जिन में बाद में चक्रदार रेखाएं दिखाई देती हैं. उग्र अवस्था में धब्बे आपस में मिल कर पत्ती को झुलसा देते हैं. इस के प्रभाव से आलू छोटे व कम बनते हैं, जबकि पछेती झुलसा भी दिसंबर के अंत से जनवरी माह के शुरुआत में लगने की संभावना रहती है, जो आलू के लिए ज्यादा नुकसानदायक है.

इस बीमारी में पत्तियां किनारे व सिरे से झुलसना शुरू होती हैं. इस वजह से पूरा पौधा ही झुलस जाता है. पौधों के ऊपर कालेकाले चकत्ते दिखाई देते हैं, जो बाद में बढ़ जाते हैं. इस के चलते कंद भी प्रभावित होता है.

बदलता मौसम व वातावरण में नमी होने पर यह रोग उग्र रूप धारण कर लेता है और 4 से 6 दिन में ही पूरी फसल खराब हो जाती है.

दोनों प्रकार के झुलसा रोग के प्रबंधन के लिए मौसम के साथसाथ फसल की निगरानी करते रहना चाहिए. झुलसा रोग की रोकथाम के लिए प्रोपिनेब 70 डब्ल्यूपी या क्लोरोथैलोनिल 75 डब्ल्यूपी फफूंदनाशक 400 से 500 ग्राम को 400 लिटर पानी में घोल कर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें.

जैसे ही बादल घिर आएं, तुरंत दवाओं का छिड़काव करना चाहिए. बीमारी की तीव्रता को देखते हुए फफूंदनाशक का 10 दिन के अंतराल पर पुन: छिड़काव करें.

किसानों को सलाह दी जाती है कि एक ही फफूंदीनाशक का छिड़काव बारबार न करें. फसल पर छिड़काव करते समय नाजिल को नीचे से ऊपर की ओर कर के करें, जिस से पौधे पर फफूंदनाशक अच्छी तरह पड़ जाए. ■

स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव में मदार गांव है सर्वश्रेष्ठ -राज्यपाल

उदयपुर : महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्यपाल के स्मार्ट विलेज इनिशिएटिव के अंतर्गत गोद लिए गए मदार गांव में पिछले दिनों 21 दिसंबर, 2021 को कृषि प्रदर्शनी व किसान संगोष्ठी का आयोजन राज्यपाल व कुलाधिपति कलराज मिश्र के मुख्य आथित्य में किया गया.

राज्यपाल ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मदार में स्थापित सौर ऊर्जा वृक्ष का अवलोकन किया. साथ ही, उन्होंने इसी प्रकार के और सौर ऊर्जा वृक्ष लगाने का सुझाव दिया.

इस के बाद विश्वविद्यालय द्वारा इस अवसर पर आयोजत कृषि प्रदर्शनी का अवलोकन किया. इस दौरान उन्होंने वहां स्थापित रोबोट से एमपीयूएटी की नवीन तकनीकियों की जानकारी प्राप्त की. उन्होंने प्रदर्शनी में प्रदर्शित विभिन्न तकनीकों- खाद्य प्रसंस्करण, जैविक खेती, उद्यानिकी, मशरूम, पोषक उत्पाद, छात्रों द्वारा बनाए गए विभिन्न व्यंजन एवं खाद्य पदार्थों में विशेष रुचि दिखाई.

ग्रामीणों ने अपने द्वारा उत्पादित पपीता, सीताफल व उन के बनाए तीरकमान भी राज्यपाल को भेंट किए.

राज्यपाल ने अपने संबोधन में कहा कि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय द्वारा गांव मदार में किए गए कामों का मौडल राज्य पोषित 28 विश्वविद्यालयों में सर्वश्रेष्ठ है. इस के लिए उन्होंने कुलपति प्रो. नरेंद्र सिंह राठौड़ और उन की विश्वविद्यालय टीम को बहुत बधाई दी. आप सभी की सहभागिता से यह देश का उत्कृष्ट गांव बने.

उन्होंने ग्राम विकास के बारे में अपने कुछ सुझाव भी दिए. ये इस तरह से हैं :

☛ जल संरक्षण के लिए सभी गांव वाले मिल कर प्रयास करें.

☛ यहां पर कृषि वानिकी को बढ़ावा दे कर बहुतकुछ महत्त्वपूर्ण काम किया जा सकता है. इस के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर छोटीछोटी नर्सरियां स्थापित हों, जिन में फलदार व अन्य किस्मों के पौधे तैयार किए जाएं.

☛ इस क्षेत्र में कृषि पर्यटन पर प्रशिक्षण का काम भी शुरू किया जाना चाहिए.

☛ उन्होंने कृषक उत्पादक संगठन बना कर गांव में स्वरोजगार को बढ़ावा देने की बात कही.

☛ विश्वविद्यालय सामुदायिक व व्यावहारिक विज्ञान के जरीए खाद्य पोषण विकसित प्रौद्योगिकियों के जरीए गांव वालों को लाभान्वित करें.

☛ ग्रामीण स्वच्छता के साथसाथ स्वास्थ्य जागरूकता पर भी सभी मिल कर प्रयास करें.

इस अवसर पर चयनित किसानों को विभिन्न कृषि आदान-सोलर कुकर एवं लाइट, प्रोट्रे, व्हील हो, पौध, प्रतापधन मुरगी के चूजे इत्यादि प्रदान किए गए. उन्होंने गांव के चयनित किसानों से सीधी बातचीत भी की.

इस अवसर पर विधायक, गोगुंदा प्रताप लाल भील ने भी अपने क्षेत्र के कृषि विकास की बात कही और विद्यालय के खेल प्रांगण की चारदीवारी के लिए विधायक मद से 10 लाख रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान करने की घोषणा की.

आईआईएफएल की मधु जैन ने विद्यालय के छात्रछात्राओं को टेबलेट व कंप्यूटर भेंट किए और विद्यालय के सभागार के लिए 40 लाख रुपए की स्वीकृति दी है, जिस का शिलान्यास राज्यपाल द्वारा किया गया.

इस अवसर पर कार्यक्रम में 700 से अधिक किसान और किसान महिलाएं, जिला प्रशासन के अधिकारी, विशिष्ट अतिथि दुर्ग सिंह चौहान, सरपंच लक्ष्मी देवी, जन प्रतिनिधि, विश्वविद्यालय के प्रबंध मंडल के सदस्य, उच्च अधिकारी, वित्त नियंत्रक व कार्यवाहक कुलसचिव मंजुवाला जैन, स्मार्ट विलेज समन्वयक डा. इंद्रजीत माथुर, नोडल अफसर डा. सुनील इंटोदिया, विश्वविद्यालय के विभिन्न प्राचार्य, छात्रछात्राओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया. ■

कार्यक्रम

एमपीयूएटी का 15वां दीक्षांत समारोह

उदयपुर : महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर का 15वां दीक्षांत समारोह पिछले दिनों 20 दिसंबर को आयोजित हुआ.

कुलपति डा. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति एमपीयूएटी कलराज मिश्र ने दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता की.

प्रदेश के कृषि मंत्री लालचंद कटारिया विशिष्ट अतिथि थे. दीक्षांत समारोह में डा. दुर्ग सिंह चौहान, पूर्व कुलपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ ने शिरकत की.

कुलपति द्वारा विश्वविद्यालय प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के बाद उन्होंने योग्य छात्रछात्राओं को उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्रदान किए. उस के बाद डा. दुर्ग सिंह चौहान, कृषि मंत्री एवं राज्यपाल महोदय ने अपना उद्बोधन किया.

विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डा. सुनील इंटोदिया ने बताया कि इस दीक्षांत समारोह में 938 उपाधियां दी गईं, जिन में कृषि, इंजीनियरिंग, सामुदायिक विज्ञान, खाद्य एवं आहारिकी, डेरी टैक्नोलौजी व मात्स्यकी संकाय में 706 स्नातक, 150 स्नातकोत्तर व 82 विद्या वाचस्पति की उपाधियां प्रदान की गईं.

इस समारोह में स्नातक स्तर पर सभी संकायों में कुल 13 स्वर्ण पदक, स्नातकोत्तर स्तर पर 16 व पीएचडी स्तर पर 5 व जैन इरिगेशन द्वारा इंजीनियरिंग संकाय के 2 छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए.

इस दीक्षांत समारोह में प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय की पीएचडी छात्रा स्व. शिवानी जौहरी को मरणोपरांत इलैक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई.

उल्लेखनीय है कि छात्रा की कोरोना से मौत हो गई थी, परंतु उस का पीएचडी शोध ग्रंथ परीक्षकों द्वारा प्रमाणित किया जा चुका था.

उन्होंने बताया कि इस अकादमिक सत्र से ही डिगरी प्रमाणपत्र की गुणवत्ता में भी अनेक सुधार किए गए हैं. यह उच्च कोटि के आसानी से न फटने वाले, वाटरप्रूफ और ए-4 साइज के कागज पर तैयार किए गए.

डिगरी में अनेक सिक्योरिटी फीचर्स भी अपनाए गए. हिंदी व अंगरेजी दोनों भाषाओं में छपी डिगरी पर विद्यार्थी का रंगीन फोटो, क्यूआर कोड इत्यादि अनेक सुरक्षा उपाय अपनाए.

कुलपति डा. नरेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि हाल ही में आईसीएआर द्वारा जारी रैंकिंग में एमपीयूएटी ने राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर प्रदेश का गौरव बढ़ाया है. हम ने राजस्थान में प्रथम स्थान और देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में 11वां स्थान प्राप्त किया है.

उन्होंने बताया कि उन के कार्यकाल में आईसीएआर द्वारा विश्वविद्यालय के सभी कालेजों को एक्रीडेट कर दिया गया है, जिस से राष्ट्रीय स्तर पर एमपीयूएटी की पहचान बनी है और विभिन्न केंद्र पोषित परियोजनाओं को वित्तीय मदद मिलेगी. इस से हमारे विद्यार्थियों को फाइनल वर्ष में इंटर्नशिप के दौरान वजीफा मिल सकेगा और अन्य कृषि संस्थानों व कृषि विश्वविद्यालयों में उच्च अध्ययन में प्रवेश के लिए भी प्राथमिकता मिलेगी.

इसी कड़ी में आईसीएआर, नई दिल्ली के बसमा दिशानिर्देशानुसार विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर व पीएचडी के नियमों की अनुशंसा को भी अपनाया गया है. ■

मंडलायुक्त, बस्ती का कृषि विज्ञान केंद्र पर भ्रमण

बस्ती : बस्ती मंडल के मंडलायुक्त गोविंद राजू एनएस और उन की पत्नी ने कृषि विज्ञान केंद्र, बस्ती पर स्थापित गुड़ प्रसंस्करण यूनिट का पिछले दिनों निरीक्षण किया. उन्होंने डोंगे में गन्ना डाल कर पिराई का काम आरंभ किया.

सपरिवार गेहूं ट्रायल, कड़कनाथ मुरगा, अजोला इकाइयों के निरीक्षण के दौरान उन का सुझाव था कि सहारनपुर व भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ से अलगअलग रैसिपी ले कर 50 से 60 तरह के गुड़ तैयार किए जा सकते हैं. जाड़े के समय में लोगों को गुड़ खाने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है. ऐसे में उन्हें पौष्टिक गुड़ के उत्पाद देने से आयरन, हीमोग्लोबिन की मात्रा बढ़ने के साथ ही उन की आमदनी बढ़ेगी.

गुड़ प्रसंस्करण को जिले में फैलाने के लिए जिले के गन्ना विभाग, उद्यान विभाग इस के लिए सब्सिडी दे रहे हैं. सरकार की योजनाओं का फायदा उठा कर किसान अपनी आय में वृद्धि कर रहे हैं.

केंद्र के अध्यक्ष डा. एसएन सिंह ने गुड़ के बारे में बताया, वहीं आरवी सिंह ने मातृ वृक्ष पौधशाला में सरसों की अंतःफसली खेती के बारे में जानकारी दी. इस के अलावा डा. प्रेम शंकर ने कड़कनाथ मुरगे के बारे में जानकारी दी.

इतना ही नहीं, केंद्र के अध्यक्ष डा. एसएन सिंह ने जानकारी दी कि कुलपति, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या ने बताया कि किसी भी समय राज्यपाल भ्रमण करने आ सकते हैं.

मंडलायुक्त ने आश्वासन दिया कि सभी अधूरे काम जल्दी ही पूरे कराए जाएंगे.

-बृहस्पति कुमार पांडेय ■

सौगात

कंपनियों में इंटर्नशिप के लिए चयन

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के संघटक डेरी एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के बीटैक (डेरी तकनीकी) और बीटैक (खाद्य तकनीकी) के अंतिम वर्ष के 70 छात्रों का स्टूडेंट रेडी कार्यक्रम के तहत एक सैमेस्टर के लिए विभिन्न प्रसिद्ध बहुराष्ट्रीय व राष्ट्रीय कंपनियों में इंडस्ट्रीयल ट्रेनिंग के लिए चयन हुआ.

प्रमुख कंपनियां जैसे नैस्ले, डेनोन, अमूल, आईटीसी, गोदरेज टायसन, मार्स, परफेटी, तिरुपति, अमूल फेड, बनास, सूर सागर, साबर, गोधरा, सरस, गुड़ डोट, रूफिल डेरी, देव मिल्क फूड इत्यादि कंपनियों में उन्हें इंटर्नशिप का मौका मिला है. इन में से काफी कंपनियों द्वारा इन्हें ट्रेनिंग के बाद प्लेसमैंट का अवसर भी प्रदान किया जाएगा.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के निर्देशन एवं पाठ्यक्रम के अनुसार संकाय के सभी प्रोफैशनल कार्यक्रम में हैंड्स औन ट्रेनिंग, अनुभवात्मक प्रशिक्षण, प्रोजैक्ट, ट्यूर, इंडस्ट्रीयल ट्रेनिंग जैसे कंपोनैंट के द्वारा छात्रों को उद्यमिता के लिए तैयार किया जाता है.

पिछले वर्ष से महाविद्यालय में 2 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं. आईसीएआर के द्वारा भी 5 वर्ष के लिए महाविद्यालय को मान्यता प्रदान की गई है, जिस के तहत छात्रों के लिए छात्रवृत्ति व अन्य सुविधाएं मिलेंगी. ■

भानु प्रकाश राणा, अक्षय कुलश्रेष्ठ

NO. 1 BRAND

INDIA 2016

पेट **सफा** तो

हर रोग **दफा...**

Divisa

अगर पेट सफा खाओगे बिल्कुल जोर नहीं लगाओगे

20% EXTRA
Divisa
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION

पेट सफा टेबलेट्स
पेट सफा
Natural Laxative TABLETS

super effective

अगर आप भी

कब्ज • गैस • एसिडिटी

जैसी परेशानियों से घिरे हुए है,

तो आज ही लीजिए,

आयुर्वेदिक पेट सफा ग्रेन्यूल्स

या टेबलेट। यह पहले दिन

से असर दिखाता है।

Dr. Juneja's

पेट सफा ®

Natural Laxative Granules & Tablets

प्याज व लहसुन में पौध

हमारे यहां प्याज व लहसुन कंद समूह की मुख्य रूप से 2 ऐसी फसलें हैं, जिन का सब्जियों के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण स्थान है. देश में इन की खपत काफी है और विदेशी पैसा हासिल करने में इन का बहुत बड़ा योगदान है.

वैसे तो दुनिया में भारत प्याज और लहसुन की खेती में अग्रणी है, लेकिन इन की प्रति हेक्टेयर उत्पादकता दूसरे कई देशों से कम है. इस के लिए दूसरे तमाम उपायों के साथ जरूरी है कि इन फसलों की रोगों व कीड़ों से सुरक्षा. फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले रोगों व कीड़ों की पहचान और उन की रोकथाम करने से काफी हद तक इन फसलों को बचाया जा सकता है.

मुख्य रोग

झुलसा

लक्षण : यह रोग पत्तियों और डंठलों पर छोटेछोटे सफेद और हलके पीले धब्बों के रूप में पाया जाता है, जो बाद में एकदूसरे से मिल कर भूरे रंग के धब्बे में बदल जाते हैं व आखिर में ये धब्बे गहरे भूरे या काले रंग के हो जाते हैं.

धब्बे की जगह पर बीज का डंठल टूट कर गिर जाता है. पत्तियां धीरेधीरे सिरे की तरफ से सूखना शुरू करती हैं और आधार की तरफ बढ़ कर पूरी तरह सूख जाती हैं. अनुकूल मौसम मिलते ही यह रोग बड़ी तेजी से फैलता है और कभीकभी फसल को भारी नुकसान पहुंचाता है.

रोकथाम : साफसुथरी खेती फसल को निरोग रखती है. वहीं गरमी के महीने में गहरी जुताई और सौर उपचार काफी फायदेमंद रहता है.

दीर्घकालीन असंबंधित फसलों का फसलचक्र अपनाना चाहिए.

रोग के लक्षण दिखाई देते ही इंडोफिल एम-45 की 400 ग्राम या कौपर औक्सीक्लोराइड-50 की 500 ग्राम या प्रोपीकोनाजोल 20 फीसदी ईसी की 200 मिलीलिटर प्रति एकड़ के हिसाब से 200 लिटर पानी में घोल बना कर और किसी चिपकने वाले पदार्थ के साथ मिला कर 10-15 दिन के अंतराल पर छिड़कें.

बैगनी धब्बा

लक्षण : यह रोग पत्तियों, तनों, बीज स्तंभों व शल्क कंदों पर लगता है. रोगग्रस्त भागों पर छोटेछोटे सफेद धंसे हुए धब्बे बनते हैं, जिन का मध्य भाग बैगनी रंग का होता है.

ये धब्बे जल्दी ही बढ़ते हैं. इन धब्बों की सीमाएं लाल या बैगनी रंग की होती हैं, जिन के चारों ओर ऊपर व नीचे कुछ दूर तक एक पीला क्षेत्र पाया जाता है.

रोग की उग्र अवस्था में शल्क कंदों का विगलन कंद की गरदन से शुरू हो जाता है. रोगग्रस्त पौधों में बीज आमतौर पर नहीं बनते और अगर बीज बन भी गए तो वह सिकुड़े हुए होते हैं.

रोकथाम : इस रोग की रोकथाम भी झुलसा रोग की तरह ही की जाती है.

आधारीय विगलन

लक्षण : इस रोग के प्रकोप से पौधों की बढ़वार रुक जाती है और पत्तियां पीली पड़ जाती हैं. बाद में पत्तियां ऊपर से नीचे की तरफ सूखना शुरू होती हैं. कभीकभी पौधे की शुरू की अवस्था में इस रोग के कारण जड़ें गुलाबी या पीले रंग की हो जाती हैं और आकार में सिकुड़ कर आखिर में मर जाती हैं.

रोग की उग्र अवस्था में शल्क कंद छोटे रहते हैं और इस रोग का प्रभाव कंदों के ऊपर गोदामों में सड़न के रूप में देखा जाता है.

संरक्षण

✻ आदित्य, स्नातकोत्तर छात्र, पादप रोग, डा. वाईएस परमार बागबानी और वानिकी विश्वविद्यालय, बागबानी और वानिकी महाविद्यालय, नेरी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश
✻ मांगेराम सुथार, उद्यान विभाग, हरियाणा **✻ डा. जेएन भाटिया,** प्रधान वैज्ञानिक, पादप रोग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

रोकथाम : आखिरी जुताई के समय रोगग्रस्त खेतों में फोरेट दानेदार कीटनाशी 4.0 किलोग्राम प्रति एकड़ मिट्टी में अच्छी तरह से मिलाएं.

दीर्घकालीन असंबंधित फसलों से 2-3 साल का फसलचक्र अपनाएं. कंद को खुले व हवादार गोदामों में रखना चाहिए.

विषाणु

लक्षण : इस रोग के कारण पत्तियों पर हलके पीले रंग की धारियां बनती हैं और पत्तियां मोटी व अंदर का भाग लहरदार हो जाता है. ऐसे हालात में धारियां आपस में मिल कर पूरी पत्ती को पीला कर देती हैं और बढ़वार रुक जाती है.

रोकथाम : चूंकि यह रोग कीड़ों से फैलता है, इसलिए फसलवर्धन काल में जब भी इस रोग के लक्षण दिखें, उसी समय मैटासिस्टौक्स या रोगोर नामक किसी एक दवा का एक मिलीलिटर दवा का प्रति लिटर पानी में मिला कर छिड़काव करें. जरूरत पड़ने पर दोबारा छिड़काव करें.

मुख्य कीड़े

इन फसलों को सब से ज्यादा नुकसान पहुंचाने वाले 2 मुख्य कीड़े हैं, थ्रिप्स (चुरड़ा) व लहसुन मक्खी. इन कीड़ों का प्रकोप फरवरी महीने तक होता है.

थ्रिप्स : इस कीड़े के शिशु व प्रौढ़ दोनों ही पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं. प्रौढ़ काले रंग के बहुत ही छोटे, पतले व लंबे होते हैं, जबकि शिशु यानी बच्चे हलके भूरे व पीले रंग के होते हैं. जहां से पत्तियां निकलती हैं, उसी जगह ये कीड़े रहते हैं और नईनई कोमल पत्तियों का रस चूसते हैं.

इन के प्रकोप से पत्ते के सिरे ऊपर से सफेद व भूरे हो कर सूखने व मुड़ने लगते हैं. इस वजह से पौधों की बढ़वार रुक जाती है. ज्यादा प्रकोप होने पर पत्ते चोटी से चांदीनुमा हो कर सूख जाते हैं. बाद की अवस्था में इस कीड़े का प्रकोप होने पर शल्क कंद छोटे रहते हैं और आकृति में भी टूटेफूटे होते हैं. बीज की फसल पर इस कीड़े का बहुत ज्यादा असर पड़ता है.

रोकथाम : इस कीड़े की रोकथाम के लिए बारीबारी से किसी एक कीटनाशक को 200-250 लिटर पानी में घोल बना कर प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़काव करें.

(क) 1. 75 मिलीलिटर फैनवैलरेट 20 ईसी

2. 175 मिलीलिटर डैल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी

3. 60 मिलीलिटर साइपरमेथ्रिन 25 ईसी या 150 मिलीलिटर साइपरमेथ्रिन 10 ईसी

(ख) 1.300 मिलीलिटर मेलाथियान 50 ईसी

प्याज व लहसुन में चुरड़ा कीट की रोकथाम के लिए लहसुन का तेल 150 मिलीलिटर और इतनी ही मात्रा में टीपोल को 150 लिटर पानी में मिला कर प्रति एकड़ में 3 से 4 छिड़काव करें.

थ्रिप्स की रोकथाम के समय बरतें सावधानी

☛ एक ही कीटनाशी का बारबार इस्तेमाल न करें.

☛ छिड़काव की जरूरत मार्चअप्रैल महीने में पड़ती है, क्योंकि कीड़ा फरवरी से मई महीने तक नुकसान करता है, इसलिए कोई चिपकने वाला पदार्थ घोल में जरूर मिलाएं.

☛ छिड़काव के कम से कम 15 दिन बाद ही प्याज इस्तेमाल में लाएं.

प्याज व लहसुन मक्खी

कभीकभी इस कीड़े का प्रकोप भी इन फसलों पर देखने में आता है. लहसुन की मक्खी घरों में पाई जाने वाली मक्खी से छोटी होती है. इस के शिशु (मैगट) व प्रौढ़ दोनों ही फसल को नुकसान पहुंचाते हैं.

मादा सफेद मक्खी मटमैले रंग की होती है, जो मिट्टी आमतौर पर बीज स्तंभों के पास मिट्टी में अंडे देती है. अंडों से नवजात मैगट स्तंभों के आधार पर खाते हुए फसल के भूमिगत तने वाले हिस्सों में आक्रमण करते हैं और बाद में कंदों को खाना शुरू कर देते हैं, जिस से पौधे सूख जाते हैं. बाद में इन्हीं कंदों पर आधारीय विगलन रोग का आक्रमण होता है, जिस से बल्ब सड़ने लगते हैं.

रोकथाम : आखिरी जुताई के समय खेत में फोरेट कीटनाशी 4.0 किलोग्राम प्रति एकड़ मिट्टी में अच्छी तरह से मिलाएं और बाद में थ्रिप्स में बताई गई कीटनाशियों का इस्तेमाल करें. ●

हरित क्रांति (श्वेत क्रांति) बनाम गुलाबी क्रांति

*** अखिलेश आर्येंदु**

यदि हम आजादी के बाद कृषि इतिहास की ओर नजर घुमाएं तो इस हकीकत को मानना पड़ेगा कि नेहरू युग के अंतिम साल में खाद्यान्न को ले कर देश में संकट इसलिए बढ़ा, क्योंकि केंद्र की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि पर कोई खास ध्यान नहीं दिया गया था. इस वजह से राज्यों में दंगे शुरू हो गए थे. अमेरिकी नीति 'फूड ऐंड पीस' के हिस्से के तौर पर उस समय भारत में पीएल 480 अनाज का सहारा लिया गया था.

देश को खाद्यान्न संकट से उबारने के लिए जवाहरलाल नेहरू के बाद प्रधानमंत्री के तौर पर लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान जय किसान' का नारा दे कर किसानों के साथ जवानों को भी हरित क्रांति के लिए तैयार किया.

60 के दशक का यह दौर उत्पादकता को बढ़ाने के मद्देनजर गेहूं (बाद में धान पर भी) उत्पादन पर खास जोर दिया गया और 80 के दशक तक भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर ही नहीं हो गया, बल्कि निर्यात भी करने लगा.

इन में वैज्ञानिक डा. एमएस स्वामीनाथन के प्रयासों का भी हाथ था. इसे देश की पहली हरित क्रांति के रूप में जाना जाता है. यह (हरित क्रांति) 60 के दशक से ले कर 80 के दशक के मध्य तक पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश से ले कर भारत के दक्षिणी राज्यों तक फैल गई. लेकिन वक्त के साथ हरित क्रांति के व्यावसायीकरण करने की बात भी सामने आई. कृषि से जुड़े परंपरागत मूल्य एवं संस्कृति विलुप्त हुए. धरती से जल दोहन और रासायनिक जहरीले उर्वरकों के बेतहाशा इस्तेमाल की वजह से धरती और खाद्यान्न दोनों जहरीले हुए.

यदि उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण पर आधारित आर्थिक नीतियों के कारण भारत की पिछले 30 सालों में आर्थिक विकास की गति तेजी से बढ़ी है, तो साथ में इस हकीकत को भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि तथाकथित आर्थिक विकास का फायदा भारत के उस अभिजात्य वर्ग को मिला, जो पहले से ही बेहतर जिंदगी जी रहा था.

गौरतलब है जो आर्थिक विकास उदारीकरण और निजीकरण की नीतियों को लागू करने के बाद हुआ, उस में ऐसी भी नीतियां हैं, जो कई तरह के सवाल खड़ा करती हैं. उन में कुछ ऐसे सवाल भी हैं, जो सीधे आम आदमी, पर्यावरण, पशुधन के खात्मे से ताल्लुक रखते हैं.

कृषि से ताल्लुक रखने वाली श्वेत क्रांति और हरित क्रांति को ले कर भी सवाल खड़े किए जाते रहे हैं. इस के पीछे केंद्र और राज्य सरकारों की गलत नीतियां रही हैं.

भापजा की सरकार ने साल 2014 में सत्ता संभालते ही नई हरित क्रांति की बात कही, वहीं पर मांस निर्यात को बढ़ावा देने के लिए एक बड़ी रकम बूचड़खानों को भी दी. यह भाजपा की उस नीति से मेल नहीं खाती, जो भारतीय परंपरा और संस्कृति को बढ़ावा देने वाली है.

यदि आंकड़ों पर जाएं तो साल 2014 में जब राजग सरकार सत्ता में आई उस ने मांस

निर्यात और बूचड़खानों के लिए अपने पहले ही बजट में 15 करोड़ की सब्सिडी दी और टैक्स में छूट का विधिवत प्रावधान किया. इस से समझा जा सकता है कि भाजपा की नीतियां मांस निर्यात के मामले में जैसी कांग्रेस की थीं, वैसी ही हैं.

आंकड़ों की तह में जाएं, तो पता चलता है कि साल 2003-04 में भारत से 3.4 लाख टन गायभैंस के मांस का निर्यात हुआ, जो साल 2012-13 में बढ़ कर 18.9 लाख टन हो गया. यह बढ़ोतरी साल 2014-15 में 24 लाख टन पहुंच गई यानी 14 फीसदी की बढ़ोतरी हुई. वहीं साल 2019-20 में 1,030.41 मीट्रिक टन मांस का निर्यात किया गया, जिस की कीमत तकरीबन 16.32 करोड़ रुपए थी.

आंकड़े बताते हैं कि दुनिया में जितना मांस का निर्यात होता है, उस में भारत अकेले ही तकरीबन 58.7 फीसदी निर्यात करता है. गौरतलब है की भारत 65 देशों को मांस का निर्यात करता है. इन में सऊदी अरब, कुवैत, मिस्त्र, मलयेशिया, फिलीपींस, म्यांमार, नेपाल, लाइबेरिया और वियतनाम प्रमुख हैं. विदेशों में बढ़ते मांस निर्यात की वजह से भारत में जो मांस कभी 30 रुपए प्रति किलोग्राम बिकता था, वह आज 300 रुपए प्रति किलोग्राम बिक रहा है.

मांस निर्यात से सब से ज्यादा असर दूध उत्पादन से ताल्लुक रखने वाली श्वेत क्रांति पर पड़ा है. जब 13 जनवरी, 1970 को श्वेत क्रांति की शुरुआत हुई, तब इसे आम आदमी के रोजगार, आर्थिक स्थिति में सुधार और बेहतर स्वास्थ्य से जोड़ कर देखा गया.

पिछले 40 सालों में जिस तरह से मांस निर्यात के जरीए विदेशी पैसा कमाने की होड़ लगी हुई है, उस ने श्वेत और हरित क्रांति को रोकने या खत्म करने का काम किया है.

गौरतलब है विदेशों में बढ़ते मांस के निर्यात का सीधा असर दूध उत्पादन और घटते पशुधन पर पड़ रहा है.

गौरतलब है कि पशुधन भारतीय कृषि का आधार रहा है. गैरकानूनी बूचड़खानों की वजह से पशुधन पर सीधे असर पड़ा है जिस से पशुपालन बहुत ही खर्चीला काम हो गया है.

घटते दुधारू जानवरों की वजह से पिछले 20 सालों में दूध का दाम तेजी से बढ़ा है. आम आदमी जो कोई दुधारू जानवर नहीं पाल सकता, वह महंगे दूध खरीदने की हालत में नहीं होता है.

गौर करने वाली बात यह है कि बिना किसी सरकारी मदद के देश में दूध का 70 फीसदी कारोबार असंगठित ढांचा संभाल रहा है. देश में दूध उत्पादन में 96 हजार सहकारी संस्थाएं जुड़ी

हुई हैं. 14 राज्यों में अपनी दुग्ध सहकारी संस्थाएं हैं. लेकिन मांस निर्यात की वजह से पशुधन के खात्मे का असर घटते दूध उत्पादन पर साफ दिखाई पड़ रहा है. इस असंगठित क्षेत्र (दूध उत्पादन) में 7 करोड़ से ज्यादा लोग जुड़े हुए हैं, जिस में अशिक्षित कारोबारी ज्यादा हैं.

यदि मांस निर्यात पर सरकारी रोक न लगी या गैरकानूनी बूचड़खानों के खिलाफ कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो संभव है कि कुछ सालों में ही इस असंगठित क्षेत्र से जुड़े लोगों को किसी और क्षेत्र में कारोबार के लिए मजबूर हो कर आना पड़े.

मांस निर्यात के आईसीएआर के आंकड़े बताते हैं कि हर साल तकरीबन 9.12 लाख जो भैंसें बूचड़खानों में कत्ल कर दी जाती हैं, यदि वे भैंसें कत्लखाने में जाने से बच जाएं, तो 2,95,50,000 टन गोबर की खाद बनाई जा सकती है. इस से 39.40 हेक्टेयर कृषि भूमि को खाद मुहैया कराई जा सकती है. इस से जहां जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा, वहीं महंगी रासायनिक खादों से भी छुटकारा मिल जाएगा.

दूसरी तरफ यदि देखा जाए तो इनसान और जानवर एकदूसरे के पूरक हैं. इनसान यदि एक जानवर को पालता है, तो वह जानवर उस के पूरे परिवार को पालता है. इतना ही नहीं, बंदर, रीछ, घोड़े, बैल, सांड़, भैंसा और गाय इनसान की जिंदगी के अहम हिस्से हैं.

आज भी लाखों लोगों की आजीविका इन जानवरों पर आधारित है. राजस्थान में एक कहावत है, कहने को तो भेड़ें पालते हैं, दरअसल भेड़ें ही इन को पालती हैं. इन के दूध, घी और ऊन आदि से हजारों परिवारों की जीविका चलती है. भेड़ों के दूध को वैज्ञानिकों ने फेफड़े के रोगियों के लिए बहुत ही फायदेमंद बताया है.

'बांबे ह्यूमैनेटेरियन लीग' के अनुसार, जानवरों से हर साल दूध, खाद, ऊर्जा और भार ढोने वाली सेवा द्वारा देश को अधिक आय होती है. इस के अलावा मरने के बाद इन की हड्डियों और चमड़े से जो आय होती है, वह भी करोड़ों रुपए में. यांत्रिक कत्लखानों को बंद कर दिया जाए, तो लाखों जानवरों का वध ही नहीं रुकेगा, बल्कि उस में इस्तेमाल होने वाला 70 करोड़ लिटर से अधिक पानी की बचत होगी, जो कत्लखानों की धुलाई में इस्तेमाल होता है.

ऐसे एकदो नहीं, बल्कि तमाम उदाहरण हैं, जिन से मांस निर्यात से होने वाले नुकसान का पता चलता है. आज जरूरत इस बात की है कि दुधारू जानवरों और भार ढोने वाले जानवरों को उन की उपयोगिता के मुताबिक उन का उपयोग किया जाए और उन्हें कत्लखाने भेजने की अपेक्षा उन को परंपरागत कामों में इस्तेमाल किया जाए. इस से जहां दुधारू जानवरों की संख्या बढ़ेगी, वहीं दूध और कंपोस्ट खाद की समस्या से भारत को नजात मिलेगी.

यदि महज भेड़ों को ही बूचड़खानों में भेजने की जगह उन का परंपरागत इस्तेमाल (जब तक वे जीवित रहें) किया जाए, तो 600 करोड़ रुपए का दूध मिलेगा, 450 करोड़ रुपए की खाद, 50 करोड़ रुपए की ऊन प्राप्त होगी. इसी तरह गाय के वध को रोक देने से सालभर में जो लाभ होगा, वह हैरानी में डालने वाला है.

आंकड़ों के अनुसार, एक गाय के गोबर से सालभर में तकरीबन 17,000 रुपयों की खाद प्राप्त होगी. रोजाना यांत्रिक कत्लखानों में 60,000 गाय कटती हैं जिन के गोबर मात्र से प्रतिवर्ष लगभग एक अरब रुपए की आमदनी हो सकती है. दूध, घी, मक्खन और मूत्र से होने वाले फायदे को जोड़ दिया जाए, तो अरबों रुपए की आय केवल गाय के वध को रोक देने से देश को हो सकती है.

ये आंकड़े और तथ्य यह बताते हैं कि देश की खुशहाली आम आदमी की बेहतरी के साथसाथ पर्यावरण की रक्षा के लिए गुलाबी क्रांति की नहीं, बल्कि निरापद श्वेत और हरित क्रांति की जरूरत है. इस से परंपरागत व्यवसायों को बढ़ावा मिलेगा और मांस निर्यात जैसे अहिंसा प्रधान देश में हिंसा वाले व्यवसाय से छुटकारा भी मिल सकेगा. ■

दिल्ली प्रैस
गृहशोभा
सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट
स्वतंत्र चट्टान से विश्वास का आईना बनाए, तैयार करे हर कल के लिए.
पाक्षिक पत्रिका
संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

जनवरी माह के खास काम

✻ अक्षय कुलश्रेष्ठ

नए साल का जनवरी महीना खेतीकिसानी के लिहाज से काफी अहम माना जाता है. सर्दी के मौसम में फसल की रंगत बदलने लगती है. इसलिए जरूरी है कि ठिठुरती सर्दी में फसलों को पाले से बचाएं और समयसमय पर उन की उचित देखभाल करें. साथ ही, फसल को उन की जरूरत के मुताबिक सिंचाई, निराईगुड़ाई व कीटों के साथसाथ रोगों से भी महफूज रखें. तो आइए जानते हैं, इस महीने में किए जाने वाले खेतीकिसानी के खास काम :

☛ ठंडे मौसम में गेहूं के खेतों पर सब से ज्यादा ध्यान देने की जरूरत होती है. गेहूं की सिंचाई के मामले में सचेत रहना बहुत जरूरी है. मोटेतौर पर 20 दिनों के अंतराल पर खेतों की लगातार सिंचाई करते रहना चाहिए.

☛ खरपतवारों के प्रति भी चौकन्ना रहना जरूरी है और उन्हें समयसमय पर निकालते रहना चाहिए. खरपतवारों के साथसाथ दूसरी फसलों के पौधों को भी गेहूं के खेतों से उखाड़ देना चाहिए.

☛ अपने मसूर व मटर के खेतों का जायजा लें और उन की अच्छी तरह से निराईगुड़ाई करें. निराईगुड़ाई से तमाम खरपतवार तो निबटते ही हैं, साथ ही पौधों को खुराक भी ठीक से मिलती है.

☛ चने व मटर के खेतों में फूल आने से पहले सिंचाई करें. ध्यान रखें कि इन फसलों में फूल बनने के दौरान सिंचाई करना मुनासिब नहीं होता. जब फूल पूरी तरह से आ चुके हों, तब फिर से सिंचाई करें.

☛ अपने जौ के खेतों का मुआयना करें. अगर बोआई को एक महीना हो चुका हो, तो बिना चूके खेतों की सिंचाई करें. सिंचाई के अलावा जौ के खेतों की निराईगुड़ाई करना भी जरूरी है, ताकि तमाम खरपतवारों से नजात मिल जाए.

☛ सरसों व राई के खेतों की निराईगुड़ाई करें, ताकि खरपतवार काबू में रहें. अगर पौधों में फूल व फलियां आ रही हों, तो सिंचाई करना न भूलें.

☛ राई व सरसों की फसलों पर इस दौरान बालदार सूंड़ी का हमला हो सकता है. इस की रोकथाम के लिए उचित कीटनाशक का छिड़काव करें.

☛ जनवरी माह में ज्यादातर तोरिया की फसल तैयार हो जाती है. जब इस की तकरीबन 75 फीसदी फलियां सुनहरे रंग की लगने लगें, तो फसल की कटाई का काम करें. कटाई के बाद फसल को अच्छी तरह सुखा कर उस की मड़ाई करें.

☛ गन्ने की पेड़ी फसल व शरदकालीन बोआई वाले गन्ने की कटाई का काम पूरा करें.

☛ गन्ने की कटाई के दौरान निकली पत्तियों को जलाएं नहीं. इन पत्तियों को जमा कर के कंपोस्ट बनाने में इस्तेमाल करें. इन पत्तियों को पशुओं को बांधे जाने वाली जगह पर बिछाया जा सकता है.

☛ गन्ने की पत्तियों को आगामी पेड़ी फसल में पलवार के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं. ऐसा करने से खेत में काफी समय तक नमी बनी रहती है. और खरपतवार भी ज्यादा नहीं निकलते हैं.

☛ प्याज की रोपाई के लिहाज से जनवरी का महीना सब से उम्दा होता है, लिहाजा यह काम हर हालत में कर डालें. प्याज की रोपाई करने से पहले चुने गए खेत में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश डालना न भूलें. इन

चीजों की मात्रा के लिए अपने इलाके के कृषि वैज्ञानिक की राय जरूर लें. प्याज की रोपाई के बाद हलकी सिंचाई जरूर करें.

☛ भले ही आलू को मोटापे की खास वजह माना जाता है, मगर जनवरी में नए आलू का जलवा खूब रहता है. आलू की अगेती फसल जनवरी में खुदाई के लिए तैयार हो जाती है. खुदाई हाथों से करने के बजाय मशीन से करना बेहतर रहता है.

☛ जनवरी में पाला पड़ने का खतरा काफी बढ़ जाता है. पाले से बचाव के लिए छोटे फलों वाले पौधों व सब्जियों की नर्सरी को टाट वाली बोरियों या घासफूस के छप्परों से सही तरीके से ढक दें. पाला गिरने वाली रात को बाग व खेत की सिंचाई जरूर करें.

☛ तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी, करेला, भिंडी वगैरह की बोआई के लिए कई बार जुताई कर के खेत तैयार करें. खेत की मिट्टी में गोबर की सड़ी हुई खाद मिलाना न भूलें.

☛ संतरा, माल्टा, किन्नू, नीबू व आड़ू के पेड़ों की कटाईछंटाई करें. कृषि वैज्ञानिकों से सलाह ले कर इन पेड़ों में कैमिकल व गोबर की सड़ी खाद डालें.

☛ अपने आम के बाग का बारीकी से मुआयना करें, क्योंकि मौसम आने पर उन में कोई कमी नहीं आनी चाहिए. आम के पेड़ों के तनों पर लगाई गई अल्काथीन शीट की ठीक से सफाई करें.

☛ अंगूर की बेलों की काटछांट का काम इस महीने के आखिर तक हर हालत में निबटा लें. जगह हो तो अंगूर की नई बेलें भी लगाएं. नई बेल लगाने के बाद सिंचाई करना जरूरी होता है.

☛ नए साल के पहले महीने में अंडों की खपत में काफी इजाफा हो जाता है, मगर मुरगियों पर ठंड का खौफ भी बढ़ जाता है. ऐसे में मुरगियों की सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करें, ताकि वे ठंड व बीमारी से मरने न पाएं.

☛ गायभैंसों को ठंड से बचाने का मुकम्मल बंदोबस्त करें. बुखार व दस्त जैसी दिक्कतों की दवाएं हर वक्त पास में मौजूद होनी चाहिए. ■

पौधशाला में एकीकृत जीवनाशी प्रबंधन

*** डा. मु. सुहैल**

सही समय पर किसान खेत की जुताई कर के उस में गोबर, कंपोस्ट व बालू मिला कर अच्छी तरह तैयार कर लें. पौधशाला की क्यारी बनाते समय यह भी ध्यान रखें कि वह जमीन से 6-8 सैंटीमीटर उठी हुई हो और चौड़ाई 80-100 सैंटीमीटर ही रखें.

पौधशाला में ट्राईकोडर्मा और सड़ी हुई गोबर की खाद का मिश्रण अच्छी तरह से मिलाएं. जीवाणु आधारित स्यूडोसैल की 25 ग्राम प्रति वर्गमीटर के हिसाब से मिट्टी में मिला कर बोआई करें.

बीजों की बोआई करते समय पौधशाला में बीज से बीज व लाइन से लाइन व बीज की गहराई का खास ध्यान रखें.

पौधों को जमने के बाद ट्राईकोडर्मा का 10 ग्राम प्रति लिटर पानी में घोल तैयार कर छिड़काव करें.

पौधशाला में पौध उखाड़ते समय सही नमी होनी चाहिए.

रोपाई के एक दिन पहले पौधशाला में से निकाल कर पौधे को ट्राईकोडर्मा 10 ग्राम प्रति लिटर पानी के हिसाब से खेत में छायादार जगह पर एक फुट गहरा गड्ढा खोद कर उस में पौलीथिन शीट बिछा कर नाप कर पानी भर कर दें और जरूरी मात्रा में ट्राईकोडर्मा को मिला लें, फिर उस में पौधे के गुच्छे बना कर रातभर खड़ा कर दें, जिस से निकट भविष्य में फसल में रोग लगने का खतरा खत्म हो जाता है. ■

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's
डा.ऑर्थो®
Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2014
Consumer Survey Report, MRD 2014

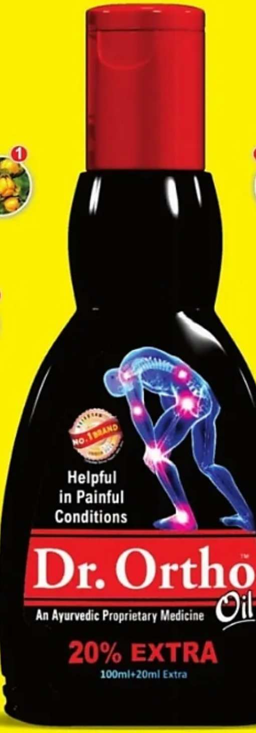

NO.1 BRAND
Helpful
in Painful
Conditions
Dr. Ortho™
Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल
जोड़ों में सूजन की समस्या को
कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल
जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के
दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल
नसों के दर्द और जोड़ों
के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल
जोड़ों में सूजन और दर्द के
लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल
पुराने जोड़ों के दर्द की
स्थिति में अत्यधिक
फायदेमंद है।

कपूर तेल
विभिन्न जोड़ों के दर्द
में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल
जोड़ों और मांसपेशियों में
सूजन को कम करता है।

तिल तेल
मांसपेशियों और जोड़ों के
दर्द को कम करने में
मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
बिस्मथ एवं बेलाडोना मिश्रित एंटासिड लिक्विड
स्टोमाफिट
लिक्विड
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
PROTECTIVE COATING ACTION
KEEPS STOMACH FIT

450ML, 200ML, 100ML

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, गणतंत्र दिवस की परेड देखने दिल्ली आये हो, जब से आये हो बस भर-भर के खाये हो। लगता है पेट नहीं गैस का गुब्बारा लाये हो।
अरी भाग्यवान, अपनी चिन्ता को करो कम, खाओ पियो दबा कर और शांत करो अपना मन। काहे घबरावत हो जब स्टोमाफिट साथ लाये है हम।
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
INDIA
पेटू जी और गणतंत्र दिवस की परेड

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

निम्नलिखित कारणों से हुई कमजोरी को दूर करने में सहायक

गर्भधारण, हुकवार्म, पेट में कीड़े, मासिक धर्म, साधारण कमजोरी, बीमारी या संक्रमण, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट

SUNCARE
HAEMOCAL
Delicious Taste
Iron Tonic with Folic Acid
TANGY ORANGE FLAVOUR

परिवार के हर उम्र के— सदस्य के लिए लाभकारी...

शहद सा गाढ़ा संतरे सा स्वादिष्ट

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z (450ml) जिंक के साथ उपलब्ध

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्कैन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्कैन करें